Date : 02-Nov-2008 Edition : Delhi Page No.: 2 Page Name: Delhi Size: 433.46 sq. cm

Sector: Others Circulation: 356842 AVE: Rs.329429.25 Frequency: Daily

Publication: Navbharat Times Title: Children's wishes in lines

नवभारत टाइम्स

लकीरों में छुपी होती है बाल मन की हलचल

प्रियंका सिंह ||

पेंटिंग एक : एक गांव है। वहां के कई घरों में आग लगी है। कुछ लोग जमीन पर पड़े हैं। उन्हें गोली लगी है। कुछ लोग उन पर निशाना साध रहे हैं।

पेंटिंग दो : कुछ झोपड़ियां बनी हैं। उनके बाहर कुछ लोग बंदूकें लेकर खड़े हैं। पास में कुछ महिलाएं पंक्ति में खड़ी हैं। इनके हाथ बंधे हुए हैं।

पेंटिंग तीन : एक सुंदर सा घर बना है। उसके अंदर तीन लोग हैं। मां और दो बच्चे। घर से काफी दूर पापा खड़े हैं। इनके चेहरों पर हंसी या खुशी नहीं है।

पेंटिंग चार : एक पेड़ है, जो सूखा हुआ है। उस पर एक भी पत्ता नहीं है। न ही किसी तरह का रंग है। पूरी तरह काला यह पेड़ नीरस सा नजर आ रहा है।

इन पेंटिंग्स को छोटे-छोटे मासूम बच्चों ने बनाया है। ऊपर की दो पेंटिंग सुदूर अफ्रीका के दारफूर इलाके में बनाई गईं, तो बाद की दो दिल्ली के दो स्कूलों में। इन पेंटिंग्स में बच्चों की मनोदिशा और पीड़ा साफ उबर आई है। लंबे समय से लड़ाई, भुखमरी, गरीबी और हिंसा का सामना कर रहे दारफूर में जब एक एनजीओ ने बच्चों को अपने अनुभवों के आधार पर पेंटिंग बनाने को कहा। राहत शिविरों में रह रहे इन बच्चों की तकलीफें लकीर बनकर कागज पर विभिन्न आकृतियों के रूप में उभर आईं। इनमें छह साल तक के बच्चे भी थे। असल में इन मासूमों ने आंख खुलते ही खुद को हिंसा और गरीबी के जाल में जकड़ा पाया। ऐसे में इन्होंने जो देखा वही पेंटिंग के रूप में सामने आया।

इसी तरह दिल्ली के एक अच्छे स्कूल में पढ़ रहे बच्चों से जब पेंटिंग बनाने को कहा गया तो उनमें भी वही दर्द उभरा, जो उन्होंने अपने घर या आसपास महसूस किया था। एक बच्ची के पापा उन्हें छोड़कर विदेश चले गए थे। उसने पेंटिंग में घर में मां, भाई और खुद को बनाया और वहां से दूर पापा को। खास यह है कि जब बच्ची की काउंसलिंग की गई और उसके पापा लौट आए तो उसने कलरफुल पेंटिंग बनाई। इसी तरह घर में तनाव भरे माहौल में पल रहे एक और बच्चे ने सूखा पेड़ बनाया, जो हरा-भरा नहीं था।

ये वाकये साबित करते हैं कि किसी भी बच्चे के व्यक्तित्व विकास में उसके परिवार के अलावा आसपास होनेवाली घटनाएं खास भूमिका निभाती हैं। अगर बच्चे अपनी भावनाओं को शब्दों के जरिए नहीं बता पाते तो वे उन्हें खेल या पेंटिंग के जरिए निकालते हैं। फोर्टिस हॉस्पिटल में सीनियर सायकायट्रिस्ट समीर मल्होत्रा कहते हैं कि अगर हम बच्चों के खेलों और पेंटिंग आदि पर गौर करें तो उनके मन में चल रही हलचल जान सकते हैं। मसलन अगर बच्चा हिंसा देख रहा है तो वह अपने खिलौनों को आपस में टकराएगा और उन्हें तोड़ने की कोशिश करेगा। इसी तरह उसकी पेंटिंग्स में भी कुछ न कुछ झलक मिल जाएगी। बच्चा अगर डिप्रेशन में है तो वह पेंटिंग में रंगों का इस्तेमाल कम करता है। हाल में ऑस्कर के लिए भेजी गई आमिर खान की तारे जमीं पर में भी पेंटिंग के माध्यम से बच्चे के अहसासों को सामने रखा गया था।

मैक्स हॉस्पिटल में मनोवैज्ञानिक विभाग के हेड समीर पारिख भी इस बात से पूरी तरह इत्तफाक रखते हैं कि आर्ट के जरिए बच्चों के मन को अच्छी तरह समझा जा सकता है। हालांकि कई पेंटिंग कल्पना पर भी आधारित होती हैं लेकिन ज्यादातर में उनकी भावनाओं का प्रदर्शन होता है। इसीलिए एक्सपर्ट्स कई बार बच्चों की दिक्कतों को समझने और सुलझाने के लिए प्ले थेरपी और पेंटिंग थेरपी का सहारा लेते हैं। तो अगर बच्चों के खेलों और पेंटिंग में कुछ हटकर नजर आ रहा है, तो उसे नजरअंदाज न करें।

© Navbharat Times www.navbharattimes.com